डॉ० अनुजा कुमारी (History) Pg-1
SNSRKS, Saharsa

(11) Question:- Discuss the sources of Ancient Indian history.

प्रश्नः- प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत क्या हैं।

उत्तर :- प्राचीन भारतीय इतिहास के विभिन्न स्त्रोत हैं। यद्यपि प्राचीन भारतीयों में इतिहास लेखन की श्रृंखलाबद्ध परंपरा नहीं थी। जैसा कि हम यूनान और रोम में पाते हैं, फिर भी प्राचीन भारत में विभिन्न विषयों से संबद्ध अनेक ऐसे ग्रंथों की रचना हुई है। जो हमें प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी में सहायक सिद्ध होता है। इन ग्रंथों की विषय वस्तु धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन एवं प्रशासनिक व्यवस्था से सम्बद्ध है। इसमें अनेक काव्यों महाकाव्य और नाटकों की भी रचना हुई। जो तात्कालिन अवस्था की जानकारी प्रदान करते हैं। साहित्यिक स्त्रोत के अतिरिक्त, पुरातात्विक साधनों से भी हमें प्राचीन भारत के इतिहास का ज्ञान प्राप्त होता है।

प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए जो साधन उपलब्ध हैं उन्हें हम मूल रूप से तीन भागों में बाँट सकते हैं (a) पुरातात्विक (b) साहित्यिक (c) विदेशी लेखकों एवं यात्रियों का वर्णन। प्राचीन भारत में बहुत से विदेशी भारत आये थे। उन्हीं उन लोगों का विवरण भी हमें प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी देते हैं।

उत्खनन एवं उससे प्राप्त सामग्री के आधार पर अनेक प्राप्त साधनों एवं व्याप्त सभ्यता एवं संस्कृति का पता लगाया

Scanned with CamScanner

डॉ॰ अनुजा कुमारी (History)
SNSRKS, Saharsa

मिलते थे साथ ही उसका उपयोग बोझा ढोने में काम आते है। सिन्धुघाटी के लोग विभिन्न प्रकार का उप उद्योग धन्धों का विकास किया जो उनकी नागरिक सभ्यता का प्रमुख मुख्य आधार था उसके आर्थिक जीवन में कुम्भ कारी की भूमिका महत्व पूर्ण रही वे भावनों के लिए ईंट वो तैयार करते थे। साथ ही खाना खाने पीने की अन्य वस्तुओं को सुरक्षित रखने के लिए, भोजन पकाने के लिए तथा बच्चों को खेलने के खिलौना मिट्टी के आभूषण इत्यादि बनाये जाते थे। बर्तन को पकाने रंगने तथा चमकाने तथा उन पर चित्र बनाने की प्रचलित थे। वैसे तो यह बात अलग है कि बर्तन के अलावे कुछ पशु-पक्षी के आकृतिक वाले मिट्टी के खिलौना भी मिली है। सिन्धु घाटी के लोग अलग तरह से प्रचलित थे इतना ही नहीं वे लोग टिन और ताँबा को मिलाकर काँसा तैयार करता था क्योंकि हमे वहाँ कॉसे का ही सुराही, कलश मिले है। यह बात अलग है कि सिन्धुघाटी के लोग लोहे से प्रचलित नहीं थे लेकिन सोने चाँदी से अवश्य ही प्रचलित थे। क्यों कि वहाँ हमे सोने चाँदी का बहुत से आभूषण मिले है। इससे पता चलता है। कि ऐसा लगता है कि वहाँ के लोग सोने चाँदी से प्रचलित थे उस समय पत्थर के समान भी बनाये

डॉ० अनुजा कुमारी (History)
SNSRKS, Saharsa

जाते थे। जब कि सिन्धु समाज में पत्थर का अभाव था लेकिन फिर भी वे लोग बाहर से पत्थर मंगवा कर समान बना लेते तहाँ हमें पत्थर के बटखरा भी मिले हैं। जिससे नाप तौल के काम किये जाते हैं।

(ii) **समाजिक कारण** – हड़प्पा संस्कृति से संबंधी स्थलों की खुदाई के आधार पर हम तत्कालीन सामाजिक जीवन के बारे में जान सकते हैं। विश्व की अन्य सभ्यताओं की तरह ही सिन्धु सभ्यता का समाज भी वर्गविभेद पर आधारित था। क्यों कि खुदाईयों में हमे कुछ धनीयों के भी मकान मिले कुछ गरीबों के मकान मिले हैं। इससे ऐसा लगता है। कि वहाँ धनी वर्ग के लोग भी और गरीब वर्ग के लोग भी रहते थे। लेकिन परिवार संयुक्त होता था। क्यों कि खुदाई में बड़े-बड़े मकान मिले हैं। लेकिन जहाँ तक परिवार का पितृ सत्तात्मक और मातृसत्तात्मक की बात है। तो इसके संबंध में एक मत नहीं है। लेकिन ऐसा लगता है। कि वहाँ का परिवार मातृसत्तात्मक था। क्योंकि खुदाई में हमें स्त्रियों की बहुत सारी मूर्तियाँ नर कंकाल मिले हैं। सिन्धु घाटी के लोग खाने-पीने और वस्त्र आभूषण के सौकीन थे। गेहूँ और जौ उनके मुख्य भोजन होते थे। वे शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों होते थे। वे शाकाहारी लोग विभिन्न प्रकार के फल सब्जीयाँ दूध मांस मछली भी

Scanned with CamScanner

मिट्टी का बर्तन का प्रयोग किया जाता था जहाँ तक वस्त्रों का सवाल है। वे लोग ऊनी और सूती दोनों प्रकार के वस्त्र पहनते थे। क्योंकि मोहन-जोदड़ो से प्राप्त एक पुजारी की मूर्ति मिली है। जो चादर से अपने शरीर को ओढ़े हुए है। इससे ऐसा लगता है। कि कमर के नीचे पुरुष धोती नीचे पहनते हैं। स्त्रियाँ कमर के में घांगरा पहनती हैं। ~~स्त्रियाँ~~थी तथा सिर पर एक विशेष प्रकार का वस्त्र धारण करती थी। सिन्धुघाटी की एक विशेषता थी पुरुष और स्त्रियाँ आभुषण पहनती थी।

(iii) **धार्मिक कारण :-** सिन्धुघाटी के लोग बहु देव वादी प्रकृति पुजक थे इसी लिए वे उनी वृक्ष जल पशु आदि के पूजा करते थे। साथ-साथ वे ईश्वर की सिर आनतक की प्रतिक भक्ति की भावना प्रकट करती थी। साथ-साथ ही सिन्धुघाटी के लोग पशु, ~~स्त्रक~~ सरपों की पूजा करते थे। इसके साथ ही वे लोग ~~स्वैक~~ जल देवता की पूजा करते थे लेकिन इतनी उन्नत सभ्यता एका एक पतन हो जायगा इसकी जानकारी किसी को नहीं थी। विदेशीयों के आक्रमण आगु और बाढ़ के कारण यह सभ्यता धीरे धीरे पतन के गर्त में समा गई। इतना ही नहीं बल्कि उस समय के सारे लोग मलेरिया रोग से ग्रसित हो गये थे मलेरिया रोग

Scanned with CamScanner

में धीरे-धीरे लोगों को काल के गाल में दाखिल किया।

इस प्रकार निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि सिन्धुघाटी की सभ्यता का सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक कारण महत्वपूर्ण है। यह सभ्यता एक उन्नत सभ्यता थी। इसी लिए तो इतिहास में इस सभ्यता का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि आज के वर्तमान परिवेश में यह सभ्यता भारतीय सभ्यता मिलती जुलती सभ्यता थी।

THE END

Scanned with CamScanner